NATURE OF MEMORY

(स्मृति के स्वरूप)

By

Dr.Ramendra Kr.Singh -2

Deptt.of Psychology

Maharaja College Ara

स्मृति एक सामान्य पद है, जिसका प्रयोग प्रायः हम करते हैं। सामान्यतः पूर्व अनुभूतियों को मस्तिष्क में इकट्ठा करके रखने की क्षमता को स्मृति कहा जाता है। स्मृति को परिभाषित करते हुए लायमैन, लायमैन एवं वाररफिन्ड (1979) ने कहा है :-

"विशेष अवधि के लिए सूचनाओं को सम्पोषित करके रखना ही स्मृति है, यह समयावधि कुछ क्षणों (एक सेकेंड से कम) से लेकर जीवनकाल तक का भी हो सकता है।"

स्मृति में सूचनाओं को सम्पोषित होने की प्रक्रिया तीन अवस्थाओं से होकर गुजरती है। यह कम्प्यूटर की भाँति होता है। जब हम कोई विषय सीखते हैं तो उसका कूटसंकेतन (Encoding) होता है जिसके द्वारा सूचनाओं को हमारा मस्तिष्क स्थाई रूप में परिवर्तित करता है तथा उसे सम्पोषित कर लेता है। साधारण अर्थ में इसे स्मृति चिह्न (Memory trace) का बनना कहा जाता है। यह एक तरह की मस्तिष्कीय रसायनिक परिवर्तन के फलस्वरूप प्रेरित होता है, इसके बाद दूसरी अवस्था आती है जिसमें उस विशेष सूचना का संचयन (Storage) की प्रक्रिया प्रारंभ होती है, यानी यहाँ encoding के माध्यम से स्मृति में प्रवेश पा चुके सूचनाओं का Storage होता है। उसके बाद पुनःप्राप्ति (Retrival) की अवस्था आती है यहाँ हम अपनी आवश्यकतानुसार संचयित सूचनाओं का Recall करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि स्मृति एक तरह से

व्यक्तिगत कम्प्यूटर की भाँति होता है जिसके द्वारा हम सीखी गई विषय या सूचनाओं को स्मृति के Store से अपनी आवश्यकतानुसार निकालकर Recall करते हैं।

स्मृति के क्षेत्र में सर्वप्रथम (1885) ई० में शास्त्रीय अध्ययन (क्लासिकल अध्ययन) इबिंगहॉस ने किया। उन्होंने अपना अध्ययन निरर्थक शब्दों पर किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह एक पुनरुत्पादक (Reproductive) प्रक्रिया है जिसमें सीखे गये विषय का हू-बहू Recall किया जाता है। यानी सीखे गये विषय का स्मरण मौलिक रूप में होता है उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। अर्थात सीखी गई विषय का प्रत्यस्मरण हम फोटो स्टेट या कार्बन कॉपी की तरह हू बहू उसी रूप में करते हैं। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि "सीखी गई विषय तथा प्रत्यावाहित सामग्री (Recall material) के मात्रा में कमी हो सकती है, लेकिन उसके गुण (Quality) में कोई अन्तर नहीं होती है।" इबिंगहास ने इस संदर्भ में कई प्रयोग निरर्थक पदों पर की तथा विभिन्न समय अंतराल पर प्रयोज्य की धारणा की जाँच की और निष्कर्ष में पाया कि जैसे-जैसे समय बीतते जाते हैं धारणा की मात्रा घटती है और विस्मरण होने लगती है। उनके अनुसार प्रारंभ में विस्मरण की गति तेज होती है लेकिन बाद में मंद पड़ जाती है।

मनोवैज्ञानिकों का दूसरा समूह इबिंगहॉस की विचारधारा का खण्डन करता है तथा स्मृति के रचनात्मक-पक्ष यानी स्मरण को एक रचनात्मक प्रक्रिया मानता है। उस समूह के मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि जो कुछ भी हम सीखते हैं या, याद करते हैं, उसका Recall करते समय अपने तरफ से कुछ जोड़ देते हैं और कुछ छूट जाता है। यानी सीखी गई विषय का प्रत्यस्मरण करते समय उसमें <u>मात्रात्मक एवं गुणात्मक</u> दोनो तरह के <u>परिवर्तन</u> होते हैं। अतः स्मरण एक रचनात्मक प्रक्रिया है न कि पुनरुत्पादक।" इस दल के प्रमुख मनोवैज्ञानिक बार्टलेट, गिब्सन आदि हैं।

Scanned with OKEN Scanner

बार्टलेट ने इस संदर्भ में कई प्रयोग किये जिसमें उनका कहानी संबंधी प्रयोग और चित्र आरेखन सम्बंधी प्रयोग काफी प्रचलित है। बार्टलेट ने अपने प्रयोग में तीन विधि का प्रयोग किया :-

(i) क्रमिक उत्पादन विधि
(ii) उत्तरोत्तर पुनरुत्पादन विधि।
(iii) रेखांकी पुनरुत्पादन विधि।

क्रमिक पुनरुत्पादन विधि में एक प्रयोज्य को एक कहानी सुनाई गई। उसी कहानी को उस प्रयोज्य ने दूसरे को सुनाया, दूसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को वही कहानी सुनाया अंत में यह देखा गया कि जब सभी प्रयोज्यों ने बारी-बारी से उसी कहानी का Recall किया तो अंतिम प्रयोज्य के पास आते-आते कहानी का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया था। इसकी चर्चा बार्टलेट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक — REMEMBERING में की है जिसमें प्रकाशित कहानी 'The war of the ghosts' काफी प्रचलित है। इसी तरह उत्तरोत्तर पुनरुत्पादन विधि एवं रेखांकी विधि से भी प्रयोग किये गए और पाया गया कि कहानी का Recall करते समय अपने तरफ से बहुत चीजें जोड़ देते थे और बहुत चीजें छोड़ देते थे जिससे कहानी का स्वरूप ही बदल जाता था।

इसी प्रकार बार्टलेट ने चित्र आरेखण वाला प्रयोग किया। एक प्रयोज्य को चित्र दिखाकर बनाने को कहा जाता था देखा गया कि अंतिम प्रयोज्य तक आते-आते चित्र पूर्णतः बदल गया था। इस प्रयोग में भी उपर्युक्त तीनों विधियों का सहारा लेकर अलग-अलग प्रयोग किये गए। अंत में बार्टलेट ने इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि स्मृति में स्मरण सीखे गए विषय की कार्बन कॉपी या फोटो कॉपी नहीं है बल्कि रचनात्मक होती है। व्यक्ति जो भी प्रत्यास्मरण करता है उसमें

व्यक्ति की संस्कृति, प्रेरणा, रुचि मनोवृत्ति तथा आवश्यकताओं आदि का भी प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति-विशेष को जो चीजें पसंद नहीं होती हैं, उसे वह छोड़ देता है तथा इसके विपरीत व्यक्ति अपनी रुचि तथा आवश्यकता से प्रभावित होकर कुछ चीजें जोड़ भी देता है। आल्पोर्ट, पोस्टमैन आदि मनोवैज्ञानिक भी स्मृति को रचनात्मक मानते हैं। इनलोगों का कहना है कि प्रत्यभिज्ञान में विषय का Transformation होता है जिसमें तीन प्रक्रियाएँ - सूक्ष्मीकरण, तीक्ष्णीकरण तथा समीकरण सम्मिलित होते हैं। सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया में हम विषय के स्वरूप को छोटा कर देते हैं। उसमें हम सीखे गये विषय की मूल बातों का ही Recall करते हैं। जबकि तीक्ष्णीकरण में सीखे गये विषय का Recall करते समय उसे प्रभावपूर्ण बना लिया जाता है। उसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए संवेगात्मक शब्दों को जोड़कर प्रत्याह्वान किया जाता है। इसी प्रकार समीकरण की प्रक्रिया में सीखे गए विषय का स्वरूप बदल जाता है।

<u>निष्कर्ष</u> - उपर्युक्त दोनों ही प्रकार की विचारधाराओं का समालोचनात्मक ढंग से अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि एबिंगहॉस की विचारधारा एक प्रारंभिक विचारधारा है। एबिंगहस ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में अपने सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है, लेकिन उनका प्रयोग मूलतः निरर्थक पदों पर किया गया था जो सभी स्थिति में सही या उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक इनके सिद्धांत से कम ही सहमत हैं। दूसरी तरफ बार्टलेट के सिद्धान्त पर भी कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा दोषारोपण किया गया है जिसमें कुछ सत्यता भी है। इसके बावजूद बार्टलेट आदि का सिद्धान्त काफी वैज्ञानिक तथा तथा तर्क संगत लगता है। अतः स्मृति को रचनात्मक प्रक्रिया मानना ही अधिक उचित प्रतीत होता है।

R.Singh
26|10|24

Scanned with OKEN Scanner